International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 1; January 2018; Page No. 49-50

प्रारम्भिक शिक्षा में मातृ भाषा का प्रयोग

डॉ0 राजेश शर्मा
विभागाध्यक्ष हिन्दी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झालावाड, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

मानव का जन्म के साथ ही जानकारी का दौर प्रारम्भ हो जाता है। प्रत्येक क्षण वह कुछ जानने समझने, पहचानने का सतत प्रयास करता है। अपने परिवेध की यह जानकारी इसे अपनी मातृ भाषा में ही स्वाभाविकरूप से प्राप्त होती है। यही कारण है कि माता को शिशु का प्रथम गुरू कहा जाता है। इन्ही छोटी–मोटी जानकारियों को सहेजता और समझने का प्रयास करता हुआ वह स्कूल की देहली पर आता है। अभी वह अपनी मातृभाषा के सहारे उन छवियों को अपने मस्तिष्क में बसाने का प्रयास कर रहा होता है। कि उसे कक्षा (L.K.G.) में प्रवेश मिलता है। जहॉ उसके अध्ययन का प्रारम्भ, जानकारियॉ मूलतः अक्षर ज्ञान इत्यादि उसके मस्तिष्क में जमाने का प्रयास होता है। अभी न वह कुछ जानता है और न ही उसमें वैसी समझ विकसित हुई है, वह अभी निरा बालक है उसकी समस्या माता–पिता से अलग होने की, कक्षा में बैठने की बच्चों में घुलने–मिलने, अध्यापक के साथ समय बिताने आदि की होती है। वह मासूम अपने स्तर पर इन सबसे अन्दर ही अन्दर जूझ रहा होता है। ऐसी स्थिति में हम उसे उसके घर–परिवार की भाषा में शिक्षा देंगे तो बालक को समझने में कुछ सहजता होगी, अन्यथा उसे फिर एक नई बडी समस्या से जूझना पडेगा और इस अर्थहीन वनज का कोई अर्थ भी नहीं होगा।

प्रारम्भिक शिक्षा वस्तुतः विविध प्रकार की परिचयात्मक जानकारियां होती है जो शिक्षा और बालक के व्यक्तित्व की नींव का काम करती है यदि इसे सहज सरल और मनोरंजक तरीके से प्रदान किया जाएगा तो बालक की रूचि शिक्षा के प्रति बढेंगी। स्कूल और वहां के परिवेश के प्रति आकर्षित होगा वह वहां जाना पसंद करेगा इसीलिए खेल–खेल में शिक्षा की बात की जाती है।

मातृ भाषा से यहां अर्थ बडे क्षेत्र की वह मुख्य भाषा जिसे उस क्षेत्र के सभी लोग जानते–समझने हैं। द्विभाषी क्षेत्र से है। मातृ भाषा में शिक्षा होने पर परिवार का माहौल भी शिक्षा में सहायक होगा। बालक को घर पर भी प्रियजनों के द्वारा हंसने–खेलने में सहायता मिलती रहेगी और उस की अध्ययन के प्रति रूचि उत्तरोत्तर भी बढेगी।

उसमें अपने क्षेत्र और भाषा के प्रति सम्मान का भाव जागृत होगा। भाषा भी विकास को प्राप्त होगी अन्यथा भाषा का विकास रूक जायेगा। वह केवल और केवल बोलचाल की भाषा रह जायेगी।

अन्य भाषा में प्रारम्भिक शिक्षा का बालक के मस्तिष्क और शिक्षा के बीच अवरोध खडा करेगी जो सीखने में व्यवधान उपस्थित करेगी तथा बालक के मस्तिष्क पर अतिरिक्त दबाव डालते हुए उसके उत्साह, अध्ययन के प्रति रूचि शिक्षा की सहजता–सरलता को खत्म करते हुए शिक्षा को दुरूह बना देगी, जिसमें परिवार और परिवेश कोई मदद नहीं कर सकेगा वरन बाधक सिद्व होगा। ट्यूशन की अतिरिक्त आवश्यकता होगी परिवार पर आर्थिक बोझ बढेगा और नतीजा भी सीफर ही होगा तथा विकसित होते मस्तिष्क को कमजोर कर देगा।

वर्तमान में किशोरों में बढते डिप्रेशन, तनाव और आत्महत्या की प्रवृत्तियां का कारण बाल्यावस्था में मस्तिष्क पर होने वाला अतिरिक्त वनज भी हो सकता है। अक्सर ऐसे बच्चों में आत्मविश्वास की कमी देखी गई है– वे संकोची और असहज व्यक्तित्व होते है। उन्हें न अपनी मातृभाषा का श्रेष्ठ ज्ञान हो पाता है और न ही उस भाषा का जिसमें वे शिक्षा प्राप्त करते हैं देखने में आया है कि अपनी मातृ भाषा में प्रारिम्भक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का ज्ञान तुलनात्मक रूप से बेहतर पाया गया। शिक्षा के प्रति रूचि भी बेहतर पाई गई और जब उन्होने अन्य भाषा का विषय के रूप में अध्ययन किया तो उसमें भी ठीक थे।

यहां तक कि स्कूली शिक्षा तक की शिक्षा मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए। एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान मस्तिष्क के विकास में सहायक है और ज्ञान प्राप्ति का स्त्रोत भी होता है तथा वर्तमान युग की मांग है कि हम एकाधिक भाषाएं सीखे अतः हमें बहुत ही विवेकपूर्ण तरीके से एक ऐसी व्यवस्था बनानी चाहिये जिससे हम आवश्यकतानुसार भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करें। हमें कक्षा पॉच से अंग्रेजी और संस्कृत (अर्थात कुछ विदेशी भाषाओं और पुरातन भाषा में से एक–एक का चुनाव) का अध्ययन प्रारम्भ करते हुए उसे स्कूल तक (सीनियर तक) रखना चाहिये।

जहॉ राष्ट्र भाषा में शिक्षा दी जा रही है वहां स्कूल तक क्षेत्रीय भाषा तथा जहॉ क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा की जा रही है वहां राष्ट्र भाषा हिन्दी को भी विषय के रूप में रखा जाना चाहियें।

महाविद्यालय में विद्यार्थी को मातृभाषा के अलावा अन्य माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा होनी चाहिये क्योंकि यहां विद्यार्थी पर माध्यम थोपा नहीं जाता। वह स्वयं अपनी रूचि के अनुसार चुनाव करता हैं तथा असका मानसिक विकास उसे उसकी इजाजत देता है। जबकि प्रारम्भिक शिक्षा में यह निर्णय अभिभावकों का थोपा हुआ होता है।

चूंकि भारत एक विशाल और बहुभाषी देश है और यहां पर भाषा पर यदा–कदा बहस भी होती रहती है अतः यह माना जा सकता है कि शिक्षा नीति में ही इस का हल छिपा हुआ हो सकता है, तो क्यों न हम दक्षिण भारत की बडी–भाषाओं को उत्तर भारत में महाविद्यालय की शिक्षा में एक विषय के रूप में स्थान दें, जिससें उत्तर और दक्षिण में भाषा के जरिये साहित्य–संस्कृति का आदान–प्रदान तथा सौहार्द्र, का विस्तार हो तथा बहुत सम्भव हो कि इस तरह भाषा विवाद का कोई सर्वमान्य हल निकल सके।

इस प्रकार देश में भाषाओं का प्रसार होगा, उनका ज्ञान बडेगा और अनुवाद से ज्ञान में भी अभि वृद्वि होगी पॉच साल में विद्यार्थी दक्षिण की भाषा का श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त कर सकेगा। वहीं राष्ट्रभाषा हिन्दी का वृहद ज्ञान विद्यार्थी को स्नातक स्तर तक विस्तार से दिया जाना चाहिये जिसके अंक भी प्रतिशत में सम्मिलित हों।

इस प्रकार सुनियोजित तरीके से हम विद्यार्थियों के मानसिक बोझ

को हल्का कर सकेंगे और अल्पायु में दूसरी भाषाओं में शिक्षा देने के अपराध से भी बचेंगे। निश्चित ही सरकार इस विषय में कोई सार्थक कदम उठायेगी।

इस प्रकार विविध भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकेगा, जिससे ज्ञान का आदान–प्रदान होगा और हम विश्व के धरातल पर भी विदेशी भाषओं का ज्ञान प्राप्त कर समक्ष बन सकेंगे।

सन्दर्भ

1. मातृभाषा बालक के उन्मुक्त विकास में ज्यादा कारगर सिद्व होती है।
   ''मातृभाषा में शिक्षा ले0 प्रभाकर चौबे''।
2. विश्व के विगत 40 वर्षो में लगभग 150 अध्ययनों के निष्कर्ष है कि मातृभाषा में ही शिक्षा होनी चाहिये।
   ''मातृभाषा में शिक्षा ले0 प्रभाकर चौबे''।
3. मैं एक अच्छा वैज्ञानिक इस लिए बना क्योंकि मैंने गणित एवं विज्ञान को शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की।
   ''मातृभाषा – अतुल कोठारी''।
4. अधिकांश बच्चे स्कूल जाने से कतराते है क्योंकि उनकी शिक्षा का माध्यम वह भाषा नहीं है जो घर में बोली जाती है।
   ''संयुक्त संघ की रिपोर्ट''।
5. बच्चों को उसी भाषा में शिक्षा प्रदान की जाये, जिसका प्रयोग उसके माता–पिता, दादा–दादी, भाई–बहिन एवं सारे परिवारिक सदस्य करते है।
   ''संयुक्त संघ की रिपोर्ट (बाल अधिकारी)''।
6. अन्य भाषाओं में पढनें वाले बच्चे को दो भाषाओं का बोझ उठाना पडता है। इसे न्यूरोलोजिकल थियरी ऑफ लर्निंग कहते है।
   ''विक्की बुक्स''।
7. ''जिस देश ने अपनी भाषा को महत्व दिया वह अंग्रेजी के कारण पीछे नही रहा।''
   ''मातृभाषा में शिक्षा का महत्व ले0 जगमोहन सिंह राजपूत''।
8. ''1909 में स्वराज में विचार प्रकट करते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने कहा है कि '' हजारों व्यक्तियों को अंग्रेजी सिखलाना उन्हे गुलाम बनाना है। ''
   ''गॉधीजी के विचार''।
9. विदेशी माध्यम बच्चो पर अनावश्यक दबाव डालने रटने और नकल करने की प्रवृति को प्रोत्साहित करता है तथा उनमें मौलिकता का अभाव पैदा करता है। यह देश के बच्चो को अपने ही घर में विदेशी बना देता है।
   ''गॉधीजी के विचार''।
10. यदि मुझे कुछ समय के लिए निरंकुश बना दिया जाए तो मैं विदेशी माध्यम को तुरन्त बन्द कर दूंगा।
    ''गॉधीजी के विचार''।